नैतिकता की अवधारणा —

भारतीय संस्कृति में नैतिकता की अवधारणा में अनेक गुणों को शामिल किया गया है। मानवीय एकता, सत्य पर विश्वास, उदारता, अन्याय के प्रति संघर्ष, साहस, सच्चरित्रता, निस्पृहता, सहानुभूति, संवेदना और समन्वयवादी दृष्टिकोण आदि को नैतिकता की अवधारणा में ही शामिल किया जाता है। इन्ही सद्गुणों के आधार पर मनुष्य मनुष्य बना रह सकता है और विश्व के समक्ष आदर्श उपस्थित कर सकता है। मेरी दृष्टि में कोई भी आदमी फरिश्ता नही होता, विशेषताओं के साथ कमियों की संभावनाओं को भी नकारा नही जा सकता। बावजूद इसके हर इंसान का मन इस बात के लिए जागरूक बने कि मैं बुराइयों को मिटाने का तो दावा नही कर सकता, लेकिन अपने स्वयं के जीवन में बुराइयों के आने के दरवाजों को अवश्य बंद रखूंगा। इसी संकल्प से एक अच्छे इंसान की तलाश का काम पूरा हो सकता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने संदर्भ में कहा है कि जब व्यक्ति अपने आपको नही देख पाता, तब हजारों-हजारों समस्याएं पैदा होती चली जाती है। इनका कहीं

अंत नही होता। गरीबी की समस्या हो, मकान और कपड़े की समस्या हो ये सारी की सारी गौण समस्याएं हैं, मूल समस्याएं नही हैं। ये पत्तों की समस्याएं हैं, जड़ों की नही हैं। पत्तों का क्या ? पतझड़ आता है सारे पत्ते झड़ जाते हैं। वसंत आता है और सारे पत्ते आ जाते हैं, वृक्ष हरा-भरा हो जाता है। यह मूल समस्या नही है।

मूल समस्या यह है कि व्यक्ति अपने आपको नही देख पा रहा है। उसके पीछे ये पांच कारण या समस्याएं काम कर रही हैं। पहला मिथ्या दृष्टिकोण, दूसरा संयम, तीसरा प्रमाद, चौथा कषाय, पांचवां चंचलता जैन दर्शन के अनुसार ये पांच मूल समस्याएं हैं।